लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो। माणुसखेत्तं ण णव्वदे। अदीदकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, णरतिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो। अदीदकाले पंचरज्जुबाहल्लं तिरियपदरं विउव्वमाणा वाउक्काइया फुसंति त्ति। बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्तेहि सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि वट्टमाणकाले तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो। किं कारणं ? जेण पंचरज्जुबाहल्लं रज्जुपदरं वाउकाइयजीवावूरिदं बादरएइंदियजीवावूरिदअट्ठपुढवीओ च, तेसिं पुढवीणं हेट्ठा ट्ठिदवीसवीसजोयणसहस्सबाहल्लं तिण्णि तिण्णि वादवलए लोगंतट्ठिदवाउकाइयखेत्तं च एगट्ठ कदे लोगस्स संखेज्जदिभागो होदि त्ति। एदेहि अदीदकाले वि एत्तियं चेव खेत्तं फोसिदं, विवक्खिदपदपरिणदाणमेदेसिं सव्वद्धमण्णत्थच्छणाभावादो। वेउव्वियपदपरिणदेहि वट्टमाणकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो अमुणिदविसेसो फोसिदो। तीदे काले तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो

भाग स्पर्श किया है। इस विषयमें मनुष्यक्षेत्रका प्रमाण ज्ञात नहीं है। उन्हीं जीवोंने अतीत कालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग और नरलोक तथा तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, अतीतकालमें पांच राजु बाहल्यप्रमाण तिर्यक्प्रतरको विक्रिया करनेवाले वायुकायिक जीव निरन्तर स्पर्श करते हैं। स्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घात, इन पदोंसे परिणत बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रियपर्याप्त जीवोंने वर्तमानकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका संख्यातवां भाग और नरलोक तथा तिर्यग्लोक, इन दोनों लोकोंसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है।

शंका– बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रियपर्याप्त जीवोंका सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके संख्यातवें भाग प्रमाण स्पर्शनक्षेत्र होनेका क्या कारण है ?

समाधान– इसका कारण यह है कि पांच राजु बाहल्यवाला राजुप्रतरप्रमाण क्षेत्र वायुकायिक जीवोंसे परिपूर्ण है और बादर एकेन्द्रिय जीवोंसे आठों पृथिवियां व्याप्त हैं। उन पृथिवियोंके नीचे स्थित बीस बीस हजार योजन बाहल्यवाले तीन तीन वातवलयोंको और लोकांतमें स्थित वायुकायिक जीवोंके क्षेत्रको एकत्रित करनेपर सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका संख्यातवां भाग हो जाता है।

इन्हीं उक्त जीवोंने अतीतकालमें भी इतना ही क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, विवक्षित पदपरिणत इन उक्त जीवोंके सभी कालोंमें अन्यत्र रहनेका अभाव है। वैक्रियिकसमुद्घातसे परिणत बादरएकेन्द्रिय और बादरएकेन्द्रियपर्याप्त जीवोंने वर्तमानकालमें सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मानुषक्षेत्रसे अज्ञातविशेष प्रमाणक्षेत्र स्पर्श किया है। अतीतकालमें उन्हीं जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका संख्यातवां भाग और नरलोक तथा तिर्यग्लोक, इन दोनों लोकोंसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत उक्त जीवोंने अतीत और वर्तमानकालमें सर्वलोक स्पर्श किया है।

फोसिदो। मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तीद-वट्टमाणकालेसु सव्वलोगो फोसिदो। एवं बादरेइंदियअपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं। णवरि वेउव्वियं णत्थि। सुहुमेइंदिय-सुहुमेइंदिय-पज्जत्तापज्जत्तएहि सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो, 'सुहुमा जल-थलागासे सव्वत्थ होंति' त्ति वयणादो।

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्त केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ५८ ॥

एदस्सत्थो– बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिएहि तेसिं पज्जत्तेहि य सत्थाणसत्थाण विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो। तेसिं चेव अपज्जत्तेहि सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो,

---

इसी प्रकारसे बादर एकेन्द्रियअपर्याप्त जीवोंका भी स्पर्शनक्षेत्र कहना चाहिए। विशेष बात यह है कि उनके वैक्रियिकसमुद्घात नहीं होता है। स्वस्थान स्वस्थान, वेदना, कषाय, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपरिणत सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रियपर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रियअपर्याप्त जीवोंने तीनों ही कालोंमें सर्वलोक स्पर्श किया है, क्योंकि, 'सूक्ष्मकायिकजीव जल, स्थल और आकाशमें सर्वत्र होते हैं' ऐसा आगमका वचन है।

द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रियपर्याप्त, द्वीन्द्रियअपर्याप्त; त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रियपर्याप्त, त्रीन्द्रियअपर्याप्त; चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रियपर्याप्त और चतुरिन्द्रियअपर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ५८ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं-- स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घातसे परिणत द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और उनके पर्याप्त जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत उक्त जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग और नरलोक तथा तिर्यग्लोक, इन दोनों लोकोंसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। स्वस्थानस्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घातपरिणत उन्हीं द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। यह

---

१ विकलेन्द्रियैर्लोकस्यासंख्येयभागः सर्वलोको वा। स. सि. १, ८.

माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एसा वट्टमाणपरूवणा पुव्वुत्तरसंभालण-णिमित्तं कदा।

सव्वलोगो वा ॥ ५९ ॥

एत्थ ताव 'वा' सद्दट्ठो उच्चदे– बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिएहि तेसिं चेव पज्जत्तेहि य सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो अदीदकाले फोसिदो। विगलिंदियसत्थाणत्था सयंपहपव्वदस्स परभागे चेव होंति त्ति तदो परभागे पुव्वं व पदरागारेण ठइदे विगलिंदियसत्थाणसत्थाणखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि। सेसपदेहि वइरिसंबंधेण विगलिंदिया सव्वत्थ तिरियपदरब्भंतरे होंति त्ति पदरागारेण ठइदे एदं पि खेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं चेव होदि। मारणंतियउववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो। तेसिं चेव अपज्जत्तेहि सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतिय-

---

वर्तमानकालिक स्पर्शनक्षेत्रकी प्ररूपणा पूर्व और उत्तर अर्थके अर्थात् अतीत और अनागत कालसम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्रके संभालनेके लिए की गई है।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ५९ ॥

यहांपर पहले 'वा' शब्दका अर्थ कहते है– स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घातपरिणत द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और उनके ही पर्याप्त जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र अतीतकालमें स्पर्श किया है।

स्वस्थानस्वस्थानस्थ विकलेन्द्रिय जीव स्वयम्प्रभपर्वतके परभागमें ही होते हैं, इसलिए परभागवर्ती क्षेत्रको पूर्वके समान प्रतराकारसे स्थापित करनेपर विकलेन्द्रिय जीवोंका स्वस्थानस्वस्थानक्षेत्र तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमात्र होता है। शेष पदोंकी अपेक्षा वैरी जीवोंके सम्बन्धसे विकलेन्द्रिय जीव सर्वत्र तिर्यक्प्रतरके भीतर ही होते हैं, इसलिए प्रतराकारसे स्थापित करनेपर यह क्षेत्र भी तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमात्र ही होता है। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपरिणत उक्त जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है। उन्हीं जीवोंमेंसे स्वस्थानस्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घातपरिणत अपर्याप्त जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, तथा अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। मारणान्तिकसमुद्घात तथा उपपादपदपरिणत विकलेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है। पंचेन्द्रियतिर्यंच अपर्याप्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र

उववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं जधा कारणं उत्तं, तधा एत्थ वि पुध पुध विगलिंदियअपज्जत्ताणं वत्तव्वं।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ६० ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तपंचिंदियदुगपरूवणाए तुल्ला, उभयत्थ वट्टमाण-कालावलंबणं पडि साधम्मादो।

अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा, सव्वलोगो वा ॥ ६१ ॥

दुविधपंचिंदियमिच्छादिट्ठीहि सत्थाणपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदि-भागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो। एत्थ पुव्वं व जोदिसियवेंतरावासरुद्धखेत्तं अदीदकाले पंचिंदियतिरिक्खेहि सत्थाणीकयखेत्तं च घेत्तूण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो दरिसेदव्वो। एसो 'वा' सद्दसूचिदत्थो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा,

---

बतलाते समय जिस प्रकार (उक्त क्षेत्र होनेका जो) कारण कहा है, उसी प्रकारसे यहांपर भी पृथक् पृथक् द्वीन्द्रियादि विकलेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका क्षेत्र बतलाते हुए उसी कारणको कहना चाहिए।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ६० ॥

इस सूत्रकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त, इन दोनोंकी क्षेत्रप्ररूपणाके समान है, क्योंकि, दोनों ही स्थानोंपर वर्तमानकालके अवलम्बनके प्रति समानता है।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ६१ ॥

स्वस्थानस्वस्थानपदपरिणत पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त, इन दोनों ही प्रकारके पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। यहांपर पूर्वके समान ही ज्योतिष्क और व्यन्तर देवोंके आवासोंसे रुद्ध क्षेत्रको तथा अतीतकालमें पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके द्वारा स्वस्थानीकृत अर्थात् स्वस्थानस्वस्थानरूपसे परिणत क्षेत्रको लेकर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग दिखाना चाहिए। यह 'वा' शब्दसे सूचित अर्थ है। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घातपरिणत उक्त दोनों प्रकारके पंचेन्द्रिय जीवोंने आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, मेरुपर्वतके मूलभागसे ऊपर छह राजु और नीचे दो राजु, इस प्रकार आठ राजु क्षेत्रके भीतर सर्वत्र पूर्वपदपरिणत

---

१ पंचेन्द्रियेषु मिथ्यादृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभागः अष्टौ चतुर्दशभागा वा देशोनाः सर्वलोको वा। स. सि. १, ८.

मेरुमूलादो उवरि छ, हेट्ठा दो रज्जुखेत्तब्भंतरे सव्वत्थ पुव्वपदपरिणदुविहपंचिंदियाणमुवलंभा। मारणंतिय-उववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो, विवक्खिदादीदकालत्तादो।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं[1] ॥६२॥

एदेसिं गुणट्ठाणाणं वट्टमाणकालविसिट्ठखेत्तपरूवणा एदेसिं चेव खेत्ताणिओगद्दारोघम्हि उत्तपरूवणाए तुल्ला। कुदो ? सासणप्पहुडि जाव संजदासंजदो त्ति सव्वपदाणं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागमेत्तेण, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणत्तेण च एदेसिं चेव खेत्ताणिओगद्दारउत्तरपदेहि साधम्मुवलंभादो। सेसगुणट्ठाणाणं पि सव्वपदेहि सरिसत्तदंसणादो च। अदीदकालमस्सिदूण परूवणं कीरमाणे वि णत्थि भेदो, पंचिंदियवदिरित्तगुणपडिवण्णाणमभावा।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ६३ ॥

एत्थ वि तिविधं कालमस्सिदूण ओघपरूवणा चेव कादव्वा, उभयत्थ पंचिंदियत्तं पडि भेदाभावा।

दोनों प्रकारके पंचेन्द्रिय जीव पाये जाते हैं। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत उक्त दोनों प्रकारके जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है, क्योंकि, अतीतकालकी यहां पर विवक्षा की गई है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥६२॥

इन गुणस्थानोंकी वर्तमानकालविशिष्ट स्पर्शनकी प्ररूपणा, इन्हीं जीवोंके क्षेत्रानुयोगद्वारके ओघमें कही गई क्षेत्रप्ररूपणाके तुल्य है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक सर्व पदोंका स्पर्शन सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागसे और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रसे इन्ही पूर्वोक्त जीवोंके क्षेत्रानुयोगद्वारमें कहे गये पदोंके साथ साधर्म्य पाया जाता है; तथा प्रमत्तसंयतादि शेष गुणस्थानवर्ती जीवोंके भी सर्वपदोंके साथ सदृशता देखी जाती है। अतीतकालका आश्रय लेकरके स्पर्शनप्ररूपणाके करने पर भी कोई भेद नहीं है, क्योंकि, पंचेन्द्रिय जीवोंको छोड़कर गुणस्थानोंको प्राप्त हुए जीवोंका अभाव है।

सयोगिकेवली जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ ६३ ॥

यहां पर भी तीनों कालोंको आश्रय लेकर ओघ स्पर्शनप्ररूपणा ही करनी चाहिए, क्योंकि, दोनों ही स्थानों पर पंचेन्द्रियताके प्रति भेदका अभाव है।

---

१ शेषाणां सामान्योक्तं स्पर्शनम्। स. सि. १, ८.

पंचिंदियअपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ६४ ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगा । उत्तमेव किमिदि पुणो वि उच्चदे, फलाभावा ? ण, मंदबुद्धिभवियजणसंभालणदुवारेण फलोवलंभादो ।

सव्वलोगो वा ॥ ६५ ॥

सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एत्थ पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं व तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं दरिसेदव्वं । एसो 'वा' सद्दसूचिदत्थो । मारणंतिय उववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो, सव्वलोगम्हि एदेहि पदेहि सह सव्वअपज्जत्ताणं गमणागमणपडिसेहाभावा ।

एवमिंदियमग्गणा समत्ता ।

लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ६४ ।।

इस सूत्रकी स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है ।

शंका– कही गई बात ही पुनः क्यों कही जाती है, क्योंकि, कहे हुएके पुनः कहनेमें कोई फल नहीं है ?

समाधान– नही, क्योंकि, मंदबुद्धि भव्यजनोंके संभालनेकी अपेक्षा पुनः कथन करनेका फल पाया जाता है ।

लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ।। ६५ ।।

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घातपरिणत उक्त लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । यहां पर लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके समान ही तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग दिखाना चाहिए । यह सूत्रोक्त 'वा' शब्दसे सूचित अर्थ है । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपरिणत लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है, क्योंकि, सम्पूर्ण लोकमें इन दोनों पदोंके साथ सभी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके गमन और आगमनके प्रतिषेधका अभाव है ।

इसप्रकार इन्द्रियमार्गणा समाप्त हुई ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय-बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइय-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर–तस्सेवअपज्जत्त–सुहुमपुढविकाइय-सुहुमआउकाइय–सुहुमतेउकाइय–सुहुमवाउकाइय–तस्सेवपज्जत्त–अपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, सव्वलोगो[1] ॥ ६६ ॥

पुढविकाइय-आउकाइय-तेसिं चेव सव्वसुहुमेहि सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो। बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-तेसिं चेव अपज्जत्त बादरतेउकाइय-तस्सेव अपज्जत्तवणप्फदिकाइय-पत्तेयसरीरबादरणिगोदपदिट्ठिद-तेसिं चेव अपज्जत्तएहि य सत्थाण-वेदण-कसाय-परिणदेहि तीदाणागदवट्टमाणकालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। तिरियलोगादो संखेज्जगुणत्तं

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक जीव तथा बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर वायुकायिक और बादर वनस्पतिकायिकप्रत्येकशरीर जीव तथा इन्हीं पांचोंके बादर कायसम्बन्धी अपर्याप्त जीव; सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, सूक्ष्म अग्निकायिक, सूक्ष्म वायुकायिक और इन्हीं सूक्ष्म जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ६६ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत पृथिवीकायिक और जलकायिक जीव और उन्हींके सर्व सूक्ष्मकायिक जीवोंने तीनों ही कालोंमें सर्वलोक स्पर्श किया है। स्वस्थान, वेदना और कषायपदपरिणत बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक और उन्हींके अपर्याप्त जीवोंने, बादर अग्निकायिक और उन्हींके अपर्याप्त जीवोंने, वनस्पतिकायिकप्रत्येकशरीर बादरनिगोदप्रतिष्ठित और उन्हींके अपर्याप्त जीवोंने अतीत, अनागत और वर्तमान, इन तीनों कालोंमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा तथा मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है।

शंका– उक्त जीवोंने तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, यह कैसे जाना?

---

१ कायानुवादेन स्थावरकायिकैः सर्वलोकः स्पृष्टः। स. सि. १, ८.

कधं णव्वदे ? उच्चदे– एदे पुढवीओ चेव अस्सिदूण अच्छंति । सव्वपुढवीओ च सत्तरज्जुआयदाओ, पढमपुढवी सादिरेगएगरज्जुरुंदा [१] । विदियपुढवी छहि सत्तभागेहि समहियएगरज्जुरुंदा [$१\frac{६}{७}$] । तदियपुढवी पंच-सत्तभागाहिय वे रज्जुरुंदा [$२\frac{५}{७}$] । चउत्थपुढवी चत्तारिसत्तभागाहिय-तिण्णिरज्जुरुंदा [$३\frac{४}{७}$] । पंचमपुढवी तिण्णिसत्तभागाहिय-चत्तारिरज्जुरुंदा [$४\frac{३}{७}$] । छट्ठपुढवी वे-सत्तभागाहियपंचरज्जुरुंदा [$५\frac{२}{७}$] । सत्तमपुढवी एग-सत्तभागाहिय-छरज्जुरुंदा [$६\frac{१}{७}$] । अट्ठमपुढवी सादिरेय-एगरज्जुरुंदा । पढमपुढविबाहल्लं असीदिसहस्साहियजोयणलक्खपमाणं होदि १८०००० । विदियपुढवी बत्तीसजोयणसहस्सबाहल्ला ३२००० । तदियपुढवी अट्ठावीसजोयणसहस्सबाहल्ला २८००० । चउत्थपुढवी चउवीसजोयणसहस्स-बाहल्ला २४००० । पंचमपुढवी वीसजोयणसहस्सबाहल्ला २०००० । छट्ठपुढवी सोलसजोयणसहस्सबाहल्ला १६००० । सत्तमपुढवी अट्ठजोयणसहस्सबाहल्ला ८००० । अट्ठमपुढवी अट्ठजोयणबाहल्ला ८ । एदाओ अट्ठपुढवीओ पदरागारेण ठइदे तिरियलोगबाहल्लादो संखेज्जगुणबाहल्लं जगपदरं होदि । मारणंतिय-उववादपरिणदेहि

समाधान– ये बादर पृथिवीकायिक आदि जीव पृथिवियोंका ही आश्रय लेकरके रहते हैं और सभी पृथिवियां सात राजुप्रमाण आयत हैं । प्रथम पृथिवी साधिक एक राजु चौड़ी है (१) । द्वितीय पृथिवी छह बटे सात भागोंसे अधिक एक राजु चौड़ी है ($१\frac{६}{७}$) । तृतीय पृथिवी पांच बटे सात भागोंसे अधिक दो राजु चौड़ी है ($२\frac{५}{७}$) । चौथी पृथिवी चार बटे सात भागोंसे अधिक तीन राजु चौड़ी है ($३\frac{४}{७}$) । पांचवी पृथिवी तीन बटे सात भागोंसे अधिक चार राजु चौड़ी है ($४\frac{३}{७}$) । छठी पृथिवी दो बटे सात भागोंसे अधिक पांच राजु चौड़ी है ($५\frac{२}{७}$) । सातवीं पृथिवी एक बटे सात भागसे अधिक छह राजु चौड़ी है ($६\frac{१}{७}$) । आठवी पृथिवी कुछ अधिक एक राजु चौड़ी है (१) । प्रथम पृथिवीकी मोटाई एक लाख अस्सी हजार योजन प्रमाण है (१८००००) । द्वितीय पृथिवी बत्तीस हजार योजन मोटी है (३२०००) । तृतीय पृथिवी अट्ठाईस हजार योजन मोटी है (२८०००) । चौथी पृथिवी चोबीस हजार योजन मोटी है (२४०००) । पांचवी पृथिवी बीस हजार योजन मोटी है (२००००) । छठीं पृथिवी सोलह हजार योजन मोटी है (१६०००) । सातवी पृथिवी आठ हजार योजन मोटी है (८०००) । आठवीं पृथिवी आठ योजन मोटी है (८) । इन आठों पृथिवियोंको प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्लोकके बाहल्यसे संख्यातगुणा बाहल्यप्रमाण जगत्प्रतर होता है (देखो पृ. ९१) । इसलिए उक्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा है, यह जाना जाता है ।

मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत उक्त जीवोंने भूत, भविष्य और वर्तमान

तीदाणागदवट्टमाणकालेसु सव्वलोगो फोसिदो। कुदो ? तस्सहावत्तादो। तेऊणं पुढविभंगो णवरि वेउव्वियपरिणदेहि वट्टमाणकाले पंचण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तीदे तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो। तं जधा— तेउक्काइया पज्जत्ता चेव वेउव्वियसरीरं उट्ठावेंति, अपज्जत्तेसु तदभावा। ते च पज्जत्ता कम्मभूमीसु चेव होंति त्ति। सयंपहपव्वदपरभागखेत्तं जगपदरे बद्धे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि त्ति। अधवा बादरतेउकाइयपज्जत्ता कम्मभूमीए उप्पण्णा वाउसंबंधेण संखेज्जजोयणबाहल्लं तिरियपदरं अदीदकाले सव्वमावूरिय विउव्वंति त्ति गहिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो चेव होदि। बादरतेउकाइया बादरपुढविभंगो, बादरपुढविकाइया इव बादरतेउकाइया वि सव्वपुढवीसु अच्छंति त्ति। णवरि वेउव्वियपदस्स तेउकाइयवेउव्वियपदभंगो। वाउकाइयाणं तीदाणागदकालेसु तेउकाइयाणं भंगो। णवरि वेउव्वियस्स वट्टमाणकाले माणुसखेत्तगदविसेसो ण जाणिज्जदि। अदीदकाले वेउव्वियपरिणदेहि वाउक्काइएहि तिण्हं लोगाणं

इन तीनों कालोंमें सर्वलोक स्पर्श किया है, क्योंकि, उनका यह स्पर्शनक्षेत्र स्वभावसे ही है। अग्निकायिक जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र पृथिवीकायिक जीवोंके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि वैक्रियिकसमुद्घातपदपरिणत अग्निकायिक जीवोंने वर्तमानकालमें पांचों प्रकारके लोकोंका असंख्यातवां भाग तथा भूतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग और तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है। वह इस प्रकारसे है—

तेजस्कायिक पर्याप्त जीव ही वैक्रियिकशरीरको उत्पन्न करते हैं, क्योंकि, अपर्याप्त जीवोंमें वैक्रियिकशरीरके उत्पन्न करनेकी शक्तिका अभाव है। और वे पर्याप्त जीव कर्मभूमिमें ही होते हैं, इसलिए स्वयम्प्रभपर्वतके परभागवर्ती क्षेत्रको जगत्प्रतररूपसे करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग होता है। अथवा कर्मभूमिमें उत्पन्न हुए बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव वायुके सम्बन्धसे अतीतकालमें संख्यात योजन बाहल्यवाले सर्व तिर्यक्-प्रतरको व्याप्त करके विक्रिया करते हैं, ऐसा अर्थ ग्रहण करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग ही होता है। बादर तेजस्कायिक जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र बादर पृथिवीकायिक जीवोंके स्पर्शनक्षेत्रके समान है, क्योंकि, बादर पृथिवीकायिक जीवोंके समान बादर तेजस्कायिक जीव भी सभी पृथिवियोंमें रहते हैं। विशेष बात यह है कि वैक्रियिकपदका स्पर्शन तेजस्कायिक जीवोंके वैक्रियिकपदके समान जानना चाहिए। वायुकायिक जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र अतीत और अनागतकालमें तेजस्कायिक जीवोंके समान है। विशेष बात यह है कि वर्तमानकालमें वैक्रियिकपदकी मनुष्यक्षेत्रगत विशेषता नहीं जानी जाती है। अतीतकालमें वैक्रियिकपदपरिणत वायुकायिक जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका संख्यातवां भाग और मनुष्यलोक तथा तिर्यग्लोक, इन दोनों लोकोंसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। स्वस्थानस्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घातपरिणत बादरवायुकायिक जीवोंने अतीत, अनागत और वर्तमान, इन तीनों

संखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि बादरवाउक्काइएहि तीदाणागदवट्टमाणकालेसु तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । वेउव्वियपदस्स वट्टमाणकाले खेत्तभंगो । तीदे काले वेउव्वियपदस्स वाउकाइयवेउव्वियभंगो । मारणंतिय-उववादपरिणदेहि बादरवाउक्काइएहि सव्वलोगो फोसिदो । एवं बादरवाउक्काइयअपज्जत्ताणं । णवरि वेउव्वियपदं णत्थि । सुहुमतेउक्काइय-सुहुमवाउक्काइय तेसिं पज्जत्त-अपज्जत्तएहि य सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तीदाणागदवट्टमाणकालेसु सव्वलोगो फोसिदो ।

बादरपुढविकाइय–बादरआउकाइय–बादरतेउकाइय–बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ६७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जधा खेत्ताणिओगद्दारे उत्तो तधा वत्तव्वो ।

सव्वलोगो वा ॥ ६८ ॥

एत्थ ताव 'वा' सद्दट्ठो वुच्चदे– बादरपुढविकाइयपज्जत्त-बादरआउकाइयपज्जत्त-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तएहि य सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तिण्हं

कालोंमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका संख्यातवां भाग और मनुष्यलोक तथा तिर्यग्लोक, इन दोनों लोकोंसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । वैक्रियिकसमुद्घातपदका स्पर्शनक्षेत्र वर्तमानकालमें क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । अतीतकालमें वैक्रियिकसमुद्घातपदका स्पर्शनक्षेत्र वायुकायिक जीवोंके वैक्रियिकपदके स्पर्शनके समान है । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपद-परिणत बादरवायुकायिक जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है । इसी प्रकारसे बादरवायुकायिक अपर्याप्त जीवोंका स्पर्शन जानना चाहिए । विशेष बात यह है कि इनके वैक्रियिकसमुद्घातपद नहीं होता है । स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक और उनके पर्याप्त तथा अपर्याप्त जीवोंने अतीत, अनागत और वर्तमान, इन तीनों कालोंमें सर्वलोक स्पर्श किया है ।

बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजस्कायिक और बादर वनस्पतिकायिकप्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ६७ ।।

इस सूत्रका अर्थ जैसा क्षेत्रानुयोगद्वारमें कहा गया है, उसी प्रकारसे कहना चाहिए ।

उक्त जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ।। ६८ ।।

यहांपर 'वा' शब्दका अर्थ कहते हैं– स्वस्थानस्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घात-परिणत बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादरनिगोदप्रतिष्ठित

लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतियउववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो। बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएहि य सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो। किं कारणं? सव्वपुढवीसु बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता णत्थि, 'चित्ताए उवरिमभागे चेव अत्थि' त्ति आइरियवयणादो। अधवा, पत्तेयसरीरपज्जत्ता तिरियलोगादो संखेज्जगुणं खेत्तं फुसंति। कुदो? बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ताणं तिरियलोगादो संखेज्जगुणफोसणखेत्तब्भुवगमादो। ण च पत्तेयसरीरपज्जत्तवदिरित्तबादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ता अत्थि। बादरणिगोदपदिट्ठिदा सव्वे पत्तेयसरीरा चेवेत्ति कधं णव्वदे?

बीजे जोणीभूदे जीवो वक्कमइ सो व अण्णो वा।
जे वि य मूलादीया ते पत्तेया पढमदाए॥ १६॥

इदि सुत्तवयणादो णव्वदे।

पर्याप्त जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत जीवोंने सर्व लोक स्पर्श किया है। स्वस्थानस्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घातपदपरिणत बादर वनस्पतिकायिकप्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग और तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है।

शंका– बादर वनस्पतिकायिकप्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमात्र स्पर्शनक्षेत्र होनेका क्या कारण है?

समाधान– सर्व पृथिवियोंमें बादरवनस्पतिकायिकप्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव नहीं होते हैं, क्योंकि, 'चित्रापृथिवीके उपरिम भागमें ही बादरवनस्पतिकायिकप्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव होते हैं' इस प्रकार आचार्योंका वचन है।

अथवा, प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणे क्षेत्रको स्पर्श करते हैं, क्योंकि, बादरनिगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा स्पर्शनक्षेत्र स्वीकार किया गया है। तथा प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंको छोड़कर बादरनिगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त नामके कोई अन्य जीव नहीं होते हैं। इसलिए उनका स्पर्शनक्षेत्र तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा बन जाता है।

शंका– बादरनिगोदप्रतिष्ठित जीव सभी प्रत्येक शरीरी ही होते हैं, यह कैसे जाना?

समाधान– 'योनीभूत बीजमें वही पूर्व पर्यायवाला जीव अथवा अन्य दूसरा भी जीव संक्रमण करता है। और जो बीज मूलादिक बादरनिगोदप्रतिष्ठित वनस्पतिकायिक जीव हैं वें सब प्रथम अवस्थामें प्रत्येकशरीर ही होते हैं॥ १६॥

इस सूत्रवचनसे जाना जाता है कि बादरनिगोदप्रतिष्ठित जीव सभी प्रत्येक शरीरी ही होते हैं।

बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ता सव्वासु पुढवीसु अत्थि त्ति कधं णव्वदे ? सव्वपुढवीसु विज्जमाणपुढविकाइयपज्जत्तफोसणेण सह एगत्तेणुवविट्ठअसंखेज्जाणि तिरियपदराणि त्ति वक्खाणवयणादो णव्वदे । तम्हा पत्तेयसरीरपज्जत्तेहि फोसिदखेत्तेण तिरियलोगादो संखेज्जगुणेण होदव्वमिदि । जधा पत्तेयसरीरवणप्फदिकाइयपज्जत्ता सव्वासु पुढवीसु होंति, तधा बादरआउकाइयपज्जत्तेहि वि सव्वासु पुढवीसु होदव्वं । अधवा बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तपत्तेगसरीरा चेव सव्वपुढवीसु होंति । बादरणिगोदाणमजोणीभूदपत्तेयसरीरपज्जत्ता चित्ताए उवरिमभागे चेव होंति त्ति कट्टु बादरवणप्फदिकाइपत्तेयसरीरपज्जत्ते बादरणिगोदाणमजोणीभूदे चेव घेत्तूण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो त्ति घेत्तव्वं । मारणंतिय-उववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो । एवं बादरतेउक्काइयपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं । णवरि वेउव्वियस्स तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो वत्तव्वो ।

बादरवाउपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स संखेज्जदिभागो ॥ ६९ ॥

शंका— बादरनिगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीव सर्व पृथिवियोंमें होते हैं, यह कैसे जाना ?

समाधान— 'सर्व पृथिवियोंमें विद्यमान पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके स्पर्शनके साथ एकत्वसे उपविष्ट असंख्यात तिर्यक् प्रतरप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र होता है' इस प्रकारके व्याख्यानवचनसे जाना जाता है कि बादरनिगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीव सर्व पृथिवियोंमें होते हैं ।

इसलिए प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंसे स्पृष्ट क्षेत्र तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा होना चाहिए । जिस प्रकारसे प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सभी पृथिवियोंमें होते हैं, उसी प्रकारसे बादर जलकायिक पर्याप्त जीव भी सभी पृथिवियोंमें होना चाहिए । अथवा, बादरनिगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त प्रत्येकशरीरवाले जीव ही सर्व पृथिवियोंमें होते हैं । बादरनिगोदके अयोनीभूत प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीव चित्रा पृथिवीके उपरिम भागमें ही होते हैं, इसलिए बादर निगोदोंके अयोनीभूत बादरवनस्पतिकायिकप्रत्येकशरीर जीव ही ग्रहण करके अर्थात् उनकी अपेक्षा 'तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग होता है' ऐसा अर्थ ग्रहण करना चाहिए । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत जीवोंने सर्व लोक स्पर्श किया है । इसी प्रकारसे बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवोंका भी स्पर्शनक्षेत्र कहना चाहिए । विशेष बात यह है कि तेजस्कायिक जीवोंके वैक्रियिकसमुद्घात पदका स्पर्शनक्षेत्र तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग होता है ऐसा कहना चाहिए ।

बादरवायुकायिक पर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ६९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जधा खेत्ताणिओगद्दारे उत्तो तधा वत्तव्वो, वट्टमाणकालमस्सिदूण ट्ठिदत्तादो ।

सव्वलोगो वा ॥ ७० ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । मारणंतिय-उववादपदपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो ।

वणप्फदिकाइयणिगोदजीवबादरसुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, सव्वलोगो ॥ ७१ ॥

वणप्फदिकाइयणिगोदजीवसुहुमपज्जत्त-अपज्जत्तएहि सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो । बादरवणप्फदिकाइयबादरणिगोद-तेसिं पज्जत्त-अपज्जत्तएहि सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तिसु

इस सूत्रका अर्थ जैसा क्षेत्रानुयोगद्वारमें कहा है, उसी प्रकारसे यहां पर कहना चाहिए, क्योंकि, वर्तमानकालको आश्रय करके यह सूत्र स्थित है अर्थात् कहा गया है ।

बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ७० ॥

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घातपरिणत उक्त जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका संख्यातवां भाग और मनुष्यलोक तथा तिर्यग्लोक, इन दोनों लोकोंसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत उक्त जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है ।

वनस्पतिकायिक जीव, निगोद जीव, वनस्पतिकायिक बादर जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म जीव, वनस्पतिकायिक बादर पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक बादर अपर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, निगोद बादर पर्याप्त जीव, निगोद बादर अपर्याप्त जीव, निगोद सूक्ष्म पर्याप्त जीव और निगोद सूक्ष्म अपर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ७१ ॥

स्वस्थान, वेदना, कषाय, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद, इन पदोंसे परिणत वनस्पतिकायिक निगोद जीव और उनके सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंने तीनों ही कालोंमें सर्वलोक स्पर्श किया है । स्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घातपदपरिणत बादर वनस्पतिकायिक, बादर निगोद उनके पर्याप्त तथा अपर्याप्त जीवोंने तीनों ही कालोंमें सामान्य-

वि कालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छादिट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं[1] ॥ ७२ ॥

वट्टमाणकालमदीदकालं च अस्सिदूण जधा ओघम्हि सासणादिगुणाणं परूवणा कदा, तधा एत्थ वि कादव्वा। णवरि मिच्छाइट्ठीणं पंचिदियमिच्छादिट्ठिभंगो, मारणंतियउववादपदे मोत्तूण अण्णत्थ सव्वलोगत्ताभावा।

तसकाइयअपज्जत्ताणं पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो ॥ ७३ ॥

वट्टमाणकालमस्सिदूण जधा पंचिंदियअपज्जत्ताणं परूवणा कदा, तधा एत्थ वि वट्टमाणकालमस्सिदूण परूवणा कादव्वा। जधा अदीदकालमस्सिदूण सत्थाण-वेदण-कसायपदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो,

---

लोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत उक्त जीवोंने तीनों ही कालोंमें सर्वलोक स्पर्श किया है।

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ ७२ ॥

वर्तमानकाल और अतीतकालको आश्रय करके जैसी ओघ-स्पर्शनप्ररूपणामें सासादन आदि गुणस्थानोंकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकारसे यहांपर भी करनी चाहिए। विशेष बात यह है कि त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा पंचेन्द्रियमिथ्यादृष्टि जीवोंके समान जानना चाहिए, क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदको छोड़कर अन्यत्र अर्थात् शेष पदोंमें सर्वलोकप्रमाण स्पर्शनक्षेत्रका अभाव है।

त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र पंचेन्द्रियलब्ध्यपर्याप्त जीवोंके समान लोकका असंख्यातवां भाग है ॥ ७३ ॥

वर्तमानकालका आश्रय करके जिस प्रकारसे पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा की गई है, उसी प्रकारसे यहांपर भी वर्तमानकालका आश्रय करके स्पर्शनप्ररूपणा करनी चाहिए। तथा जैसे अतीतकालका आश्रय करके स्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घातपरिणत जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां

---

१ त्रसकायिकानां पंचेन्द्रियवत्स्पर्शनम्। स. सि. १, ८.

अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो, मारणंतिय-उववादपदेहि सव्वलोगो फोसिदो त्ति पंचिंदियअपज्जत्ताणं परूवणा कदा, तधा एत्थ वि कायव्वा ।

एवं कायमग्गणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि पंचवचिजोगीसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ७४ ॥

एदं सुत्तं वट्टमाणकालमस्सिदूण ट्ठिदमिदि एदस्स परूवणं कीरमाणे जधा खेत्ताणिओगद्दारे पंचमण-वचिजोगिमिच्छादिट्ठीणं परूवणा कदा, तधा एत्थ वि मंदबुद्धिसिस्ससंभालण परूवणा कादव्वा ।

अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा, सव्वलोगो वा ॥ ७५ ॥

पंचमण-पंचवचिजोगिमिच्छादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाणपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एत्थ सत्थाणखेत्ताणयणविधाणं जाणिय कादव्वं । एसो 'वा'

भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, तथा मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है, इसप्रकारसे जैसी पंचेन्द्रियलब्ध्यपर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकारसे यहांपर भी स्पर्शनप्ररूपणा करनी चाहिए ।

इसप्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितनाक्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ७४ ॥

यह सूत्र वर्तमानकालका आश्रय करके स्थित है, इसलिए इसकी प्ररूपणा करनेपर जैसी क्षेत्रानुयोगद्वारमें पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकारसे यहां पर भी मंदबुद्धि शिष्योंके संभालनेके लिए स्पर्शनप्ररूपणा करनी चाहिए ।

पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ७५ ॥

स्वस्थानस्वस्थानपदपरिणत पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । यहां पर स्वस्थानस्वस्थान क्षेत्रके निकालनेका विधान जान करके करना चाहिए । यह 'वा' शब्दसे सूचित अर्थ है । विहार-

---

१ योगानुवादेन वाङ्मानसयोगिभिर्मिथ्यादृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभागः अष्टौ चतुर्दशभागा वा देशोनाः सर्वलोको वा । स. सि. १, ८.

सद्दसूचिदत्थो । विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । घणलोगमट्ठभागूणतेदालीसरूवेहि छिण्णेगभागो, अधोलोगं साद्धचउव्वीसरूवेहि छिण्णेगभागो, उड्ढलोगमट्ठभागूणसाद्धट्ठारस रूवेहि छिण्णेगभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो त्ति जं उत्तं होदि । मारणंतियपदेण सव्वलोगो फोसिदो ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ओघं[1] ॥ ७६ ॥

वट्टमाणकालमस्सिदूण जधा खेत्ताणिओगद्दारस्स ओघम्हि एदेसिं चदुण्हं गुणट्ठाणाणं खेत्तपरूवणा कदा, तधा एत्थ वि सिस्ससंभालणट्ठं परूवणा कादव्वा; णत्थि कोइ विसेसो । अदीदकालमस्सिदूण जधा फोसणाणिओगद्दारस्स ओघम्हि

वत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह (८/१४) भाग स्पर्श किये हैं, जो कि घनाकार लोकको आठवें भागसे कम तेतालीस (४२ ७/८) रूपोंसे विभक्त करने पर एक भाग, अथवा अधोलोकको साढ़े चौबीस (२४ १/२) रूपोंसे विभक्त करने पर एक भाग, अथवा ऊर्ध्वलोकको आठवें भागसे कम साढ़े अठारह (१८ ३/८) रूपोंसे विभक्त करने पर एक भाग प्रमाण होता है । अर्थात् उक्त तीनों ही पद्धतियोंसे क्षेत्र निकालने पर वही देशोन आठ राजु प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण— (१) घनलोक— ३४३ ÷ ३४३/८ = ८ राजु.

(२) अधोलोक— १९६ ÷ ४९/२ = ८ राजु.

(३) ऊर्ध्वलोक— १४७ ÷ १४७/८ = ८ राजु.

इसप्रकार सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका संख्यातवां भाग और नरलोक तथा तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । मारणान्तिकपदपरिणत जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ ७६ ॥

वर्तमानकालका आश्रय करके जैसी क्षेत्रानुयोगद्वारके ओघमें इन चारों गुणस्थानोंकी क्षेत्रप्ररूपणा की गई है, उसी प्रकारसे यहांपर भी शिष्योंके संभालनेके लिए स्पर्शनप्ररूपणा करनी चाहिए । इसके अतिरिक्त अन्य कोई विशेषता नहीं है । अतीतकालका आश्रय करके जैसी स्पर्शनानुयोगद्वारके ओघमें अतीत और अनागत कालोंकी अपेक्षा इन चार गुणस्थानवर्ती

---

१ सासादनसम्यग्दृष्ट्यादीनां क्षणिकषायान्तानां सामान्योक्तं स्पर्शनम् । स. सि. १, ८.

तीदाणागदकालेसु एदेहि चदुगुणट्ठाणजीवेहि छुत्तखेत्तपरूवणा कदा, तधा एत्थ वि कादव्वा, विसेसाभावा। णवरि सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु उववादो णत्थि, उववादेण पंचमण-वचिजोगाणं सहअणवट्ठाणलक्खणविरोहा।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ७७ ॥

एदेसिमट्ठण्हं गुणट्ठाणाणं जधा फोसणाणिओगद्दारस्स ओघम्हि तिण्णि काले अस्सिदूण परूवणा कदा, तधा एत्थ वि कादव्वा। जदि एवं, तो सुत्ते ओघमिदि किण्ण परूविदं ? ण, तधा परूवणाए कायजोगाविणाभाविसजोगिचउव्विहसमुग्घाद-खेत्तपडिसेहफलत्तादो।

जीवोंसे स्पर्शित क्षेत्रकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकारसे यहां पर भी करनी चाहिए, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है। विशेष बात यह है कि सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें उपपादपद नहीं होता है, क्योंकि, उपपादके साथ पांचों मनोयोग और पांचों वचनयोगोंका सहानवस्थानलक्षण विरोध है, अर्थात् उपपादमें उक्त योग संभव नहीं हैं।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती उक्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ७७ ॥

इन आठों गुणस्थानोंकी स्पर्शनानुयोगद्वारके ओघमें तीनों लोकोंका आश्रय करके जैसी स्पर्शनप्ररूपणा की गई है, उसी प्रकारसे यहां पर भी करनी चाहिए।

शंका– यदि ऐसा है, तो सूत्रमें 'ओघ' ऐसा पद क्यों, नहीं कहा ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, उस प्रकारकी प्ररूपणा काययोगके अविनाभावी सयोगिकेवलीके चारों प्रकारके समुद्घातक्षेत्रके प्रतिषेध करनेके लिए है।

विशेषार्थ– यदि सूत्रमें 'असंखेज्जदिभागो' पदके स्थान पर 'ओघं' ऐसा पद दिया जाता तो केवल मनोयोगी और वचनयोगियोंका स्पर्शनक्षेत्र बताते समय, जो केवल काययोगके निमित्तसे ही केवलीके समुद्घात होता है जिसका कि स्पर्शनक्षेत्र लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात बहुभाग और सर्वलोक है, उसका प्रतिषेध नहीं हो पाता; अर्थात् अनिष्ट प्रसंग उपस्थित हो जाता। उसी अनिष्टापत्तिके प्रतिषेधके लिए सूत्रमें 'ओघं' पद न देकर 'असंखेज्जदिभागो' पद दिया है।

---

१ सयोगकेवलिनां लोकस्यासंख्येयभागः। स. सि. १, ८.

कायजोगीसु मिच्छादिट्ठी ओघं[1] ॥ ७८ ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदकायजोगिमिच्छादिट्ठीणं तिसु वि कालेसु सव्वलोगत्तुवलंभादो, विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदेहि वट्टमाणकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तेण, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तेण, माणुसखेत्तादो असंखेज्जदिगुणत्तेण; अदीदकाले अट्ठ-चोद्दसभागत्तेण च तुल्लत्तुवलंभादो, सुत्ते ओघमिदि उत्तं।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ ७९ ॥

एदेसिमेक्कारसण्हं गुणट्ठाणाणं तिविहं कालमस्सिदूण सत्थाणादिपदाणं परूवणा कीरमाणे फोसणाणिओगद्दारोघम्हि जधा तिविहकालमस्सिदूण एक्कारसण्हं गुणट्ठाणाणं सत्थाणादिपरूवणा कदा, तधा कादव्वा; णत्थि एत्थ को वि विसेसो।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ८० ॥

काययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान सर्वलोक है ॥७८॥

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपद-परिणत काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र तीनों ही कालोंमें सर्वलोक पाया जाता है। विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिकपदपरिणत उक्त जीवोंने वर्तमानकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागसे, तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागसे, और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रकी अपेक्षा, तथा अतीतकालमें आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) भागप्रमाण स्पर्शनसे तुल्यता पाई जाती है, इसलिए सूत्रमें 'ओघ' ऐसा पद कहा है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती काययोगी जीवोंका स्पर्शन ओघके समान है ॥ ७९ ॥

इन ग्यारह गुणस्थानोंकी तीनों कालोंको आश्रय करके स्वस्थानादि पदोंकी प्ररूपणा करने पर स्पर्शनानुयोगद्वारके ओघमें जिस प्रकारसे तीनों कालोंका आश्रय लेकर ग्यारह गुणस्थानोंकी स्वस्थानादि पदसम्बन्धी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकारसे यहां पर भी करनी चाहिए, क्योंकि, यहां पर कोई विशेषता नहीं है।

काययोगी सयोगिकेवलीका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात बहुभाग और सर्वलोक है ॥ ८० ॥

---

१ काययोगिनां मिथ्यादृष्ट्यादीनां सयोगकेवल्यन्तानामयोगकेवलिनां च सामान्योक्तं स्पर्शनम्। स. सि. १, ८.

एदस्स सुत्तस्स पुधारंभो किंफलो ? ण, सजोगिकेवलि-चत्तारिसमुग्घादा कायजोगाविणाभाविणो त्ति मंदमेहाविजणावबोहणफलत्तादो । एगजोगं कादूण ओघमिदि उत्ते वि ओघत्तण्णहाणुववत्तीदो कायजोगम्हि चदुण्हं समुग्घादाणमत्थित्तं परिछिज्जदे चे, ण एस दोसो, ओघमिदि उत्ते इमाणि पदाणि अत्थि, इमाणि च णत्थि त्ति ण णव्वदे । जाणि संभवंति पदाणि तेसिं परूवणा ओघपरूवणाए तुल्ला त्ति एत्तियमेत्तं चेव णव्वदे । तेण पुध सुत्तारंभो कायजोगिम्हि चउव्विहसमुग्घादाणमत्थित्तपदुप्पायणफलो त्ति ।

ओरालियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८१ ॥

दव्वट्ठियपरूवणाए ओघत्तं जुज्जदे । पज्जवट्ठियपरूवणाए पुण ओघत्तं णत्थि, ओरालिजोगे णिरुद्धे विहार-वेउव्वियपदाणमट्ठ-चोद्दसभागत्ताणुवलंभादो । तदो एत्थ भेदपरूवणा कीरदे— सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतियपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो । उववादो णत्थि, दोण्हं सहाणवट्ठाणलक्खणविरोहा । वट्टमाणकाले

शंका— इस सूत्रके पृथक् आरम्भ करनेका क्या फल है ?

समाधान— ऐसा नहीं कहना, क्योंकि, सयोगिकेवलीमें दंड, कपाटादि चारों समुद्घात काययोगके अविनाभावी होते हैं, इस बातका मंदमेधावी जनोंको ज्ञान करानेके लिए इस सूत्रका पृथक् निर्माण किया गया है, और यही सूत्रके पृथक् निर्माणका फल है ।

शंका— पूर्वसूत्र और इस सूत्रका एक योग अर्थात् एक समास करके 'ओघ' ऐसा कहने पर भी ओघत्व-अन्यथानुपपत्तिसे काययोगी सयोगिकेवलीमें दंड-कपाटादि चारों समुद्घातोंका अस्तित्व जाना जाता है, फिर पृथक् सूत्र-निर्माणकी क्या उपयोगिता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, 'ओघ' ऐसा कहनेपर भी ये अमुक विवक्षित पद होते हैं, और ये अमुक पद नहीं होते हैं, ऐसा, विशेष नहीं जाना जाता है । किन्तु जो पद संभव हैं उनकी प्ररूपणाएं ओघप्ररूपणाके साथ समान होती हैं, इतना मात्र ही जाना जाता है । इसलिए पृथक् सूत्रका आरंभ काययोगी सयोगिकेवलीमें चारों प्रकारके समुद्घातोंका अस्तित्व प्रतिपादन करनेरूप फलके लिए है ।

औदारिककाययोगी जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान सर्वलोक है ॥ ८१ ॥

द्रव्यार्थिकनयकी प्ररूपणामें तो ओघपना घटित होता है, किन्तु पर्यायार्थिकनयकी प्ररूपणामें ओघपना घटित नहीं होता है, क्योंकि, औदारिककाययोगके निरुद्ध करनेपर विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिक पदोंके स्पर्शनका क्षेत्र आठ बटे चौदह ($\frac{८}{१४}$) भाग नहीं पाया जाता है । इससे यहांपर भेदप्ररूपणा की जाती है । स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय और मारणान्तिकपदपरिणत औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंने तीनों ही कालोंमें सर्वलोक स्पर्श किया है । यहांपर उपपादपद नहीं है, क्योंकि, औदारिककाययोग और उपपादपद, इन दोनोंका सहानवस्थानलक्षण विरोध है । वर्तमानकालमें वैक्रियिकपदपरिणत

वेउव्वियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । तीदाणागदेसु तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो, वाउक्काइयवेउव्वियफोसणस्स पाधण्णविवक्खाए । विहारपरिणदेहि ओरालियकायजोगिमिच्छादिट्ठीहि वट्टमाणकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । तीदाणागदकालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो ।

सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८२ ॥

एदस्स वट्टमाणकालसंबंधिसुत्तस्स खेत्ताणिओगद्दारे ओरालियकायजोगिसासणसुत्तस्सेव परूवणा कादव्वा ।

सत्त चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ८३ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि सासण-

उक्त जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग, और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । अतीत और अनागत, इन दोनों कालोंमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका संख्यातवां भाग, और नरलोक तथा तिर्यग्लोक, इन दोनों लोकोंसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, यहां पर वायुकायिक जीवोंके वैक्रियिकपदसम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्रकी प्रधानतासे विवक्षा की गई है । विहारवत्स्वस्थानपदसे परिणत औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंने वर्तमानकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । उन्हीं जीवोंने अतीतकाल और अनागतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है ।

औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ८२ ॥

इस वर्तमानकालसम्बन्धी सूत्रकी क्षेत्रानुयोगद्वारमें कहे गये औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी क्षेत्रप्ररूपणा करनेवाले सूत्रके समान स्पर्शनप्ररूपणा करनी चाहिए ।

उक्त जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ८३ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत